गीत सीखना

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

रात का समय था और एक नवयुवक लम्बी-लम्बी घास के बीच से होकर गुज़र रहा था। एक ओर उसके परिवार का डेरा था और दूसरी ओर, दूर कहीं, पानी का एक तालाब था। उसे अँधेरे में चमचमाते नीले-हरे रंग की झलक मिल रही थी।

थोड़ी-थोड़ी देर में वह युवक रुकता, अपनी आँखें बन्द करता और घास में से बहती हवा की आवाज़ को ध्यान से सुनता। हवा कहती, *"साँय-साँय-साँय,"* और वह युवक सोचता, "क्या यही है? वह गीत?"

कुछ पल के लिए वह अपनी आँखें मूँदता, यह चाहते हुए कि हवा उसके कानों में कुछ ऐसा फुसफुसा जाए जिसे वह समझ सके : कोई शब्द या कोई जानी-पहचानी धुन। *साँय-साँय-साँय।* आह, पर यही वह आवाज़ थी जो उस युवक को सुनाई दे रही थी।

वह युवक और उसके साथी इस बीहड़ बुशलैन्ड में रहते थे [वह वन्यप्रदेश जो पेड़-पौधों, झाड़ियों और अन्य वनस्पतियों से ढका होता है] जो कई सदियों बाद ऑस्ट्रेलिया बन गया। उनके संसार की उत्पत्ति बहुत-ही दिव्य तरीक़े से हुई थी, सृष्टिकर्ता परमात्मा के गीत से वह अस्तित्व में आया था। और अब जिनके पास प्रज्ञान था, वे विद्वान इस गीत को गाते और यह उन्हें जहाँ ले जाता, वहीं वे इसका अनुसरण करते।

"हे परमेश्वरी," युवक ने मन्द स्वर में हवा से कहा। "मुझे अपने पदचिह्न दिखाएँ। अपने गीत की धुन मुझे सुनाएँ। मैं जानना चाहता हूँ।"

युवक चलता रहा। अब वह तालाब के नज़दीक पहुँच रहा था। हालाँकि वह तालाब बहुत सारी घास और नीलगिरी के पेड़ों से घिरा हुआ था, फिर भी उसकी चमक देखी जा सकती थी। उसके पैरों तले की ज़मीन में कंपन हो रहा था जैसे कि उसमें बिजली दौड़ रही हो। ऐसा लग रहा था कि ये कंपन और तेज़ होते जा रहे हैं — और हवा भी तेज़ी-से बहने लगी थी। घास लयबद्ध तरीक़े से झूम रही थी; उसकी इस गतिविधि में गोल घूमने और मुड़ने की कारीगरी थी।

युवक उस तालाब के किनारे पर पहुँच गया। घुटनों के बल बैठकर उसने काँच सदृश रत्न-समान सतह की ओर अपनी नाक बढ़ाई और वह उसकी गहराई में झाँकने लगा। और तभी उसे वह सुनाई दिया : पहले मन्द और जल्द-ही तेज़ और प्रबल होता। एक स्वर — दो स्वर — एक ताल, एक धुन।

युवक ने आश्चर्य से ऊपर देखा। मन्द हवा पास के फूलों से नन्हीं पंखुड़ियों को अपने साथ बहा ले आई थी। और अब ये पंखुड़ियाँ उसके इर्द-गिर्द घूम रही थीं, वे गीत के सुरों के साथ नृत्य कर रही थीं और आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही थीं। इस संगीत में वह अपने पूर्वजों को सुन सकता था। इस संगीत में वह धरती की मन्द ध्वनि और आकाश के गुँजन को सुन सकता था। इस संगीत में वह उसकी आवाज़ को सुन सकता था जिसने इस भव्य जगत की रचना की थी।

जब वह एक बार फिर पानी की ओर झुका तो गीत उसके चारों ओर बहने लगा। उसकी आँखों से आँसू छलक गए। ये आवाज़ें बहुत-ही सुन्दर थीं, उसे पहली बार में ही ये अलौकिक व सुपरिचित लगीं; ये आवाज़ें उसके अन्दर जो भावना जगा रही थीं, यदि वह उसे कोई नाम दे सकता तो वह होता, *घर।*

जब वह इस नई भावना से अचम्भित हो रहा था, तभी उसे एक और शोर सुनाई दिया। *चर्र, चर्र।* यह किसी के क़दमों की और उनके नीचे आए पौधों व टहनियों की सरसराहट की आवाज़ लग रही थी। उसे चाँदी-जैसी सफ़ेद दाढ़ी की एक झलक दिखाई दी।

उसने मुड़कर देखा तो, उसके बगल में उसकी ही बिरादरी के एक बुज़र्ग खड़े हुए थे। उन व्यक्ति के चेहरे का रंग साँवला था, जो भूरे-पीले और काले रंग के मिश्रण जैसा था — और उस पर झुर्रियाँ थीं जो नरम चमड़े जैसी थीं। उनका चेहरा उसी सफ़ेद दाढ़ी से ढका हुआ था। उनकी आँखों में करुणा थी।

“बेटा, क्या तुमने वह सुना है?” उन्होंने उस युवक से पूछा। “वह गीत?”

“हाँ!” युवक ने चुपके से कहा, उसकी आवाज़ ख़ुशी से भरी थी। उसने बड़ों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए उपयोग किए जाने वाले सम्बोधन का इस्तेमाल करते हुए पूछा, “बाबा, क्या आप भी उसे सुन सकते हैं?”

“हाँ, मैं बिल्कुल सुन सकता हूँ,” उन बूढ़े बाबा ने कहा। “और मैं उसे गा भी सकता हूँ। आओ।”

वे बूढ़े बाबा तालाब के किनारे-किनारे चल दिए और थोड़ा आगे जाकर घास में कहीं गायब हो गए। वह युवक आश्चर्य से उन्हें देखता रहा और फिर तेज़ी-से उनके पीछे चल दिया।

वे बूढ़े बाबा मन्द स्वर में कोई सौम्य, लयबद्ध धुन गा रहे थे। जब वे गीत की किसी विशेष पंक्ति पर पहुँचते, तो वे अचानक से मुड़ जाते — बाएँ, दाएँ, जैसा भी गीत उन्हें बताता। वे थोड़ी देर तक ऐसे ही आगे बढ़ते रहे और युवक उनके साथ चलते रहने के लिए उनके पीछे-पीछे भागता रहा। अन्ततः, वे पेड़ों की छाल से बनी एक झोपड़ी तक पहुँच गए। उसके सामने अलाव जल रहा था।

"आओ," बूढ़े बाबा ने फिर से कहा। "तुम्हें भूख लगी होगी। मेरी पत्नी खाना बना रही है।"

वे अलाव के पास बैठ गए; झोपड़ी से एक महिला बाहर आईं और उन्होंने अलाव के कोयले को डण्डी से हिलाया; उनका भी रंग साँवला और बाल सफ़ेद थे।

"तो — तुमने गीत सुना?" उन महिला ने युवक से पूछा। उन्होंने बीज वाली रोटी का एक मोटा-सा टुकड़ा कोयले के बीच से निकाला और उसके सामने रखा।

"जी, अम्मा, मैंने सुना," युवक ने उत्सुकतापूर्वक कहा। यह याद करते हुए कि क्या हुआ था, शब्द उसके मुँह से अचानक ही निकल गए। "वह *आश्चर्यजनक* था!" उसने कहा। "मैं परमेश्वरी से सचमुच *बहुत* मन से प्रार्थना कर रहा था। मैंने कहा, *हे माँ, मुझे अपना गीत सुनाएँ।* और फिर मुझे यह तालाब मिल गया जो *झिलमिला* रहा था। और फिर — और फिर —" इसके बाद जो हुआ वह सोचकर युवक की आँखें नम हो गईं। "सबसे मधुर संगीत — घास और फूल और सब कुछ नृत्य कर रहा था. . ."

"मैं उसे फिर से सुनने के लिए और इन्तज़ार नहीं कर सकता," उसने अन्ततः कह दिया।

"हाँ — और तुम ज़रूर सुनोगे," बूढ़ी महिला ने कहा और वे धीमें-से हँस दीं। "अभी के लिए तुम अभ्यास करना शुरू करो।"

वह युवक जिसने अपने दाँतों से रोटी का एक बड़ा-सा टुकड़ा काटा ही था, उनके शब्दों को सुनकर रुक गया। उसका मुँह भरा था।

"अभ्यास?" उसने झट से रोटी निगलते हुए कहा।

"हाँ, क्यों," उन महिला ने कहा। "यदि तुम्हें दोबारा वह अनुभव करना है और यदि तुम दूसरों को मार्ग दिखाने के लिए उसका उपयोग करना चाहते हो — जैसे कि बाबा ने आज शाम तुम्हें दिखाया — तो तुम्हें वह गीत सीखना होगा।"

"और तुम्हें उसका अभ्यास करना होगा," बूढ़े बाबा ने कहा।

“लेकिन — क्यों?” युवक ने पूछा। “मैं पहले ही वह गीत सुन चुका हूँ। और मैं उसे भूलने नहीं वाला।”

“हाँ, कोई भी उसे भूलने की *योजना* नहीं बनाता,” बूढ़े बाबा ने सौम्यता से कहा।

“हाँ, बिल्कुल,” युवक ने कहा। “और मैं नहीं भूलूँगा। देखिए, परमेश्वरी और मैं — हम जुड़े हुए हैं।”

“हाँ, तुम *जुड़े* हुए हो। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम अभ्यास न करो।”

युवक नाक-भौं सिकोड़ने लगा। उसे यह विचार ज़्यादा पसन्द नहीं आया। नृत्य करते फूलों का क्या? और झूमती घास? वह बिना अभ्यास किए सीधे उनका अनुभव करना चाहता था।

उसने यह घोषणा कर दी, “बाबा, शायद और लोगों को अभ्यास करने की आवश्यकता होती होगी, पर मुझे नहीं है। आप देखेंगे।”

बूढ़े बाबा ने युवक की आँखों की गहराई में देखा। उन्होंने एक क्षण के लिए कुछ नहीं कहा।

फिर उन्होंने एक गहरी साँस ली, अपने हाथों से अपनी जाँघों पर थपकी दी और उठकर खड़े हो गए। “बहुत अच्छे बेटा। तो तुम्हारे लिए कोई अभ्यास नहीं। पर अभी देर बहुत हो गई है तो तुम आज रात यहीं रुकोगे। कल तुम गीत का अनुसरण करते हुए घर वापस जा सकते हो।”

युवक कम-से-कम इस बात के लिए तैयार हो गया।

***

अगली सुबह का सूर्योदय बहुत सुन्दर था; सुनहरे-नारंगी रंग का प्रकाश इस समतल भूमि पर पिघल रहा था। जब इस प्रकाश की किरणें झोपड़ी में आईं तो युवक नींद से जाग गया।

उसने अंगड़ाई ली और वह जम्भाई लेते हुए उठकर बैठ गया।

“हूँऽऽ. . .” उसने सोचा। “घर की ओर जाने से पहले मैं कुछ नाश्ता कर सकता हूँ।”

वह बाहर टहलने लगा। अलाव फिर से जल रहा था और वे बुज़ुर्ग उसके पास बैठे हुए थे। उसे देखकर वे मुस्कराए और उसे बैठने का इशारा किया।

अपने हाथों को आपस में रगड़ते हुए वह उनके पास जाकर बैठ गया। हर तरफ़ शान्ति थी, बस कभी-कभी आग की लपटों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। आसमान में सूरज चढ़ रहा था।

वह आस-पास नाश्ता ढूँढ़ रहा था। थोड़ी और रोटी, या शायद भुनी हुई कुछ सब्ज़ियाँ। पर — ऐसा लग नहीं रहा था कि कुछ पक रहा है। उसने बुज़ुर्गों की ओर देखा। *क्या वे खा चुके थे?*

उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे।

तो वह युवक अलाव की ओर वापस मुड़ गया और वे तीनों चुपचाप वहीं बैठे रहे। युवक के पेट में चूहे कूदने लगे। वह बार-बार बुज़ुर्गों की ओर देखता कि शायद वे उसे *कुछ* खाने के लिए देंगे — अनाज के कुछ दानें, एक-दो बेर। पर वे केवल उसकी तरफ़ देखकर शान्त भाव से मुस्करा देते।

कुछ देर तक ऐसा चलता रहा और आख़िरकार उससे सहन नहीं हुआ। "अम्मा, बाबा," वह बोल पड़ा। "कृपया — क्या हम आज सुबह कुछ खाएँगे?"

बुज़ुर्ग उसकी ओर मुड़े। सुबह की रौशनी में वह उनके चेहरों की लकीरें और स्पष्टता से देख पा रहा था, कैसे वे एक-दूसरे में अन्दर-बाहर, आड़े-तिरछे ढंग से बुनी हुई थीं।

"तुम्हारा क्या मतलब है, बेटा?" बूढ़े बाबा ने पूछा।

"मेरा मतलब है, क्या हम आज सुबह नाश्ता करेंगे?"

बूढ़े बाबा अचम्भित लग रहे थे। "पर हमें ऐसा करने की क्या आवश्यकता है?"

"क्योंकि, हमें — हमें नाश्ता करना *होता है,*" युवक ने कहा। वह बूढ़े बाबा के प्रश्न से परेशान था।

"पर हमने कल रात खाया तो था," बूढ़े बाबा ने कहा।

युवक ने जो सुना उसे उस पर विश्वास नहीं हो रहा था!

"क्योंकि हमनें कल रात खाना खाया था इसका मतलब यह नहीं है कि हम आज सुबह नाश्ता नहीं करेंगे!" उसने कहा।

"हूँऽऽ. . ." बूढ़े बाबा ने कहा। "देखो, मैंने सोचा क्योंकि हमने कल रात खाना खाया था, इसलिए तुम्हें दोबारा खाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। क्योंकि निस्सन्देह वह एक समय का भोजन पर्याप्त था।"

युवक हँस पड़ा। “बेशक, मुझे दोबारा तो खाना ही पड़ेगा! नहीं तो घर जाने के लिए मेरे पास ताक़त कहाँ से आएगी?”

युवक आगे समझाने ही जा रहा था कि एक व्यक्ति को दिन में *तीन* समय का भोजन करने की आवश्यकता होती है, तभी उसे उन बूढ़े बाबा की आँखों में कुछ नज़र आया। और उनके चेहरे की लकीरों में — क्या यह उस युवक की कल्पना थी, या फिर क्या वे अब और स्पष्ट हो गई थीं? ऐसा लग रहा था मानो उसके सामने उन गीतों का प्रज्ञान प्रकट किया जा रहा हो, उस व्यक्ति की त्वचा पर सत्य का नक़्शा खिंचा हुआ था।

“ओह,” युवक ने मन्द स्वर में कहा।

“है ना?” बूढ़े बाबा ने पूछा।

“हाँ,” युवक ने कहा। “मुझे माफ़ करें, मैं पहले नहीं समझ सका। अब मैं तैयार हूँ — अभ्यास करने के लिए।”

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।